उद्धार की योजना

उद्धार की योजना क्या है ?

उद्धार की योजना* परमेश्वर की अपने बच्चों के लिए आनन्द की योजना है । इसका केन्द्र यीशु मसीह का प्रायश्चित है । यदि आप यीशु मसीह क ी शिक्षाओं का अनुसरण करते हैं, आपको इस जीवन में स्थाई शांति और मृत्यु के पश्चात अनंत आनन्द मिलेगा ।

जब आप उद्धार की योजना के विषय में सीखते हैं, आपको इन प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे: "मैं कहां से आया/आयी हूं ?" "जीवन में मेरा क्या उद्देश्य है ?" "इस जीवन के बाद मैं कहां जाऊंगा/जाऊंगी ?"

मैं कहां से आया/आयी हूं ?

आपका जीवन जन्म के साथ आरंभ नहीं हुआ था, और न ही यह मृत्यु के साथ समाप्त होगा । आप आत्मिक शरीर (जिसे कभी कभी आत्मा भी कहा जाता है) और भौतिक शरीर से बने हैं । स्वर्गीय पिता ने आपकी आत्मा की सृष्टि की थी, और आप पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले उसके साथ आत्मा के रूप में रहते थे । आप उसे जानते और उससे प्रेम करते थे, और वह आपको जानता और आपसे प्रेम करते थे । इस अवधि को पृथ्वी-पूर्व जीवन कहते हैं ।

> *"[उद्धार] की योजना ... को संसार की स्थापना से, मसीह के द्वारा, उन सभों के लिए बनाया गया था जो उसके नाम पर विश्वास करेंगे ।"*
>
> **अलमा 22:13**

अपने संपूर्ण पृथ्वी-पूर्व जीवन के दौरान, आपको उन सिद्धान्तों और आज्ञाओं को सीखाया गया था जो सुख की ओर ले जाते हैं । आप समझ में बड़ते हुए और सच्चाई से प्रेम करना सीखा । आपको उद्धार की योजना के विषय में सीखाया गया था । पृथ्वी-पूर्व जीवन के दौरान, यीशु मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में चुना गया, आपने सीखा कि उसके द्वारा आप अपने गलत चुनावों के प्रभावों पर विजय पाने के योग्य हो जाएंगे ।

* लाल शब्दों को पृष्ठ 18 और 19 में परिभाषित किया गया है ।

परिवार स्वर्गीय पिता की योजना का केन्द्र है ।

भौतिक शरीर पाने के लिए पृथ्वी पर आना और सही चुनाव करना, सीखाना आपके लिए परमेश्वर की योजना का मुख्य भाग था । स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में रहना आपको याद नहीं, लेकिन उसने आपको सही और गलत को जानने की योग्यता दी है । आप उसके प्रेम और सच्चाई को पहचनाने के योग्य होंगे । अपने अनुभवों और परिक्षाओं के द्वारा, आप निरंतर सही चुनाव करना सीख सकते हैं । यीशु मसीह की मदद से, आप पृथ्वी के जीवन के बाद स्वर्गीय पिता के साथ रहने के योग्य होगें ।

यद्यपि, पृथ्वी पर आने से पहले आप परमेश्वर की उपस्थिति में, अपने अनंत पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ रहते थे, इसे आपकी याददाशत से निकाल दिया गया है । पृथ्वी पर आकर शरीर पाने और अपने सुख के लिए परमेश्वर की योजना का अनुसरण करने के सौभाग्य को पाकर आपने खुशी से जयजयकार किया था ।

अपने पृथ्वी-पूर्व जीवन में, आपने सीखा था कि केवल परमेश्वर की योजना का अनुसरण करने का चुनाव करके आप इस जीवन में और अनंतता के लिए स्थाई शांति और स्तुंष्टि पा सकते हैं । क्योंकि वह आपसे प्रेम करते हैं, स्वर्गीय पिता ने आपको स्वतंत्रता, या चुनाव करने की शक्ति दी है । उसने आपको चुनने का अवसर दिया है कि आप उसकी योजना और प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण कर सकेंगे ।

शैतान, परमेश्वर के आत्मिक बच्चों में से एक ने स्वर्गीय पिता का प्रतिरोध किया और उसकी योजना को स्वीकार नहीं किया था । वह हमें बलपूर्वक उसकी इच्छा को पूरा करवाना चाहता था । दुर्भाग्यवश, स्वर्गीय पिता के कई बच्चों ने शैतान का अनुसरण करना चुना था । शैतान और उसके सर्मथकों को परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर निकाल दिया गया और उन्हें पृथ्वी पर जन्म लेने की अनुमति नहीं दी गई थी । वह आत्मा के रूप में रहते है । वे दुखी हैं, और वे चाहते हैं आप भी दुखी रहें । वे आपको लालच देते हैं और परमेश्वर के सभी बच्चे उन कामों को करते हैं जो दुख लाते हैं और वह जो परमेश्वर को पसंद नहीं हैं ।

* लाल शब्दों को पृष्ठ 18 और 19 में परिभाषित किया गया है ।

पृथ्वी-पूर्व जीवन में, आपने यीशु मसीह में विश्वास करना और परमेश्वर की योजना का अनुसरण करना चुना था । आपके चुनावों के कारण, आपने पृथ्वी पर जन्म लिया । केवल इन्हीं चुनावों को करके आप इस जीवन में शांति पा सकते हैं और इस जीवन के बाद स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में रहने के लिए वापस जा सकते हैं ।

जीवन में मेरा क्या उद्देश्य है ?

सृष्टि और पतन

पृथ्वी की सृष्टि स्वर्गीय पिता के बच्चों के रहने और अनुभव प्राप्त करने के लिए की गई थी । आदम और हव्वा पृथ्वी पर आने वाले परमेश्वर के प्रथम बच्चे थे । वे अदन की वाटिका नामक स्थान में रहते थे, जहां वे परमेश्वर की उपस्थिति में थे ।

स्वर्गीय पिता ने आदम और हव्वा को चुनने की स्वतंत्रता दी थी । उसने उन्हें अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को न खाने की आज्ञा दी थी । इस आज्ञा का पालन करने का अर्थ था कि वे उस वाटिका में ही रहते, लेकिन वे अनुभवों और चुनौतियों से सीखकर उन्नति नहीं कर सकते थे । शैतान ने आदम और हव्वा को प्रतिबंधित फल खाने का लालच दिया, और उन्होंने वैसा ही करने का चुनाव किया । यह परमेश्वर की योजना का भाग था । अपने चुनाव के कारण, वे शारीरिक रूप से और आत्मिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिए गए थे । वे नश्वर हो गए थे, यानि, वे पाप और मृत्यु के आधीन हो गए थे । वे बिना उसकी सहायता के उसके पास लौटने के लिए अयोग्य हो गए । परमेश्वर से उनके शारीरिक और आत्मिक अलगाव को पतन कहते हैं ।

स्वर्गीय पिता ने स्वर्गदूतों और पवित्र आत्मा को आदम और हव्वा को उद्धार की योजना सीखाने के लिए भेजा । इस योजना का केन्द्र यीशु मसीह का प्रायश्चित है, जो परमेश्वर के बच्चों को पतन के प्रभावों पर विजय पाने और इस जीवन में और अनंतता में आनंद पाने के योग्य बनाता है ।

* लाल शब्दों को पृष्ठ 18 और 19 में परिभाषित किया गया है ।

"यदि आदम आज्ञा का उल्लंघन न करता तो उसका पतन न होता, बल्कि वह अदन की वाटिका में ही रहता । ...

"और [आदम और हव्वा] के बच्चे न होते; क्योंकि वे अज्ञानता की अवस्था में ही रहते, कोई आनंद न होता, क्योंकि वे दुख को न जानते; कोई अच्छा काम न करते, क्योंकि वे पाप को न जानते थे ।

"लेकिन देखो, हर बात उसके ज्ञान के अनुसार ही हुई हैं जो सब बातों को जानता है ।

"आदम का पतन हुआ ताकि मनुष्य हो; और मनुष्य हैं, कि उन्हें आनंद प्राप्त हो ।"

2 नफी 2:22–25

THE
BOOK

आपका पृथ्वी का जीवन

पतन के कारण, आप परमेश्वर से शारीरिक और आत्मिक रूप से अलग कर दिए गए हैं । यह अलगाव अपने बच्चों के लिए परमेश्वर की योजना का भाग है । उसकी उपस्थिति छोड़कर पृथ्वी आने के उद्देश्य में शरीर पाना, अनुभव प्राप्त करना, और सही चुनाव करना सीखना शामिल है ।

"मैं परमेश्वर का एक बच्चा हूं,
और उसने मुझे यहां भेजा है,
उसने मुझे पृथ्वी में एक घर दिया है
साथ में दयालु और प्रिय माता-पिता ।
मुझे रास्ता दिखाओ, मेरा
मार्गदर्शन करो, मेरे साथ चलो,
मार्ग खोजने में मेरी मदद करो ।
मुझे वह सब सीखाओ जोकि
मुझे करना चाहिए
किसी दिन मैं उसके साथ
रह सकूं ।"

***स्तुति गीत* सं. 301**

जीवन के कई पहलू आनन्द लाते हैं, और कुछ दुख लाते हैं । यह अनुभव आपको अच्छे और बुरे के बीच में अतंर करना सीखने में और सही चुनाव करने में मदद करते हैं । परमेश्वर आपको अच्छा करने और उसका अनुसरण करने के लिए प्रभावित करता है, जबकि शैतान आपको परमेश्वर की उपेक्षा करना और पाप करने के लिए लालच देता है । (जानबूझ कर गलत करने का चुनाव करना या सही न करना पाप है ।) जब आप परमेश्वर का अनुसरण करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का चुनाव करते हैं, आप बुद्धि में आगे बढ़ते और आपका चरित्र मजबूत होता है । आप परिक्षाओं के समय में भी आनंद का अनुभव कर सकते हैं, और आप जीवन की चुनौतियों का सामना शांति की आत्मा के साथ करते हैं ।

आपने अपने जीवन में बहुत से अच्छे चुनाव किए हैं, लेकिन आपने कुछ गलत चुनाव भी किए हैं । जब आप गलत चुनाव करते और पाप करते हैं, आप अपने आपको कुछ हद तक परमेश्वर से दूर कर लेते हैं । धर्मशास्त्र इस अलगाव को आत्मिक मृत्यु कहते हैं । आपको परमेश्वर से अलग करने के अतिरिक्त, पाप अपराध बोध और लज्जित भी करता हैं । आप स्वयं पाप और इसके प्रभावों पर विजय नहीं पा सकते हैं ।

* लाल शब्दों को पृष्ठ 18 और 19 में परिभाषित किया गया है ।

हमें अपने चुनावों पर सावधानी से विचार करना चाहिए ।

यीशु मसीह का प्रायश्चित

क्योंकि स्वर्गीय पिता आपसे प्रेम करता है, उसने अपने पुत्र, यीशु मसीह को आपके पापों का मूल्य चुकाने के लिए भेजा था । यह भुगतान यीशु मसीह के प्रायश्चित का भाग है । यीशु मसीह ने स्वेच्छा से आपके पापों, कष्टों, रोगों, और दुखों को सहा था । उसकी महिमा और दया के द्वारा, वह आपको आपकी परिक्षाओं में मदद करता और आपको अपराध बोध और लज्जित होने से छुटकारा दिलाता है जोकि आपके पापों के कारण होते हैं ।

> *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए ।"*
>
> **यहून्ना 3:16**

आपके पापों का मूल्य चुकाते हुए, यीशु ने आपकी चुनने की स्वतंत्रता या व्यक्तिगत जिम्मेदारी को नहीं मिटाया था–वह आपकी इच्छा के विरूद्ध आपको शुद्ध नहीं करेगा । उसकी मदद और शक्ति पाने के लिए, आपको उस में विश्वास करना, पश्चाताप करना, बपतिस्मा लेना, पवित्र आत्मा का उपहार प्राप्त करना, और शेष जीवन भर उसकी शिक्षाओं का अनुसरण करना होगा । जब आप प्रायश्चित पर निर्भर होते हैं, आप परमेश्वर के प्रेम को महसूस करते हैं, और वह आपकी परिक्षाओं में आपको अन्त तक मदद करेगा । आप आनंद, शांति, और दिलासा का अनुभव करते हैं । जीवन में जो कुछ भी अनुचित लगता है वह यीशु मसीह के प्रायश्चित और दया और स्वर्गीय पिता के प्रेम के द्वारा उचित हो सकता हैं । प्रायश्चित उद्धार की योजना का केन्द्र बिन्दू है ।

इस जीवन के बाद मैं कहां जाऊंगा/जाऊंगी ?

पृथ्वी के दृष्टिकोण से, शारीरिक मृत्यु अन्त लग सकती है, लेकिन वास्तव में यह स्वर्गीय पिता की योजना में एक कदम आगे बढ़ने की एक शुरूआत है । मृत्यु होने पर, आपकी आत्मा शरीर को छोड़ देती है और आत्मा के संसार, सीखने और तैयारी करने के स्थान, में चली जाती है । इस आत्मा के संसार में, आपके इस जीवन की यादें आपके साथ रहेंगी ।

* लाल शब्दों को पृष्ठ 18 और 19 में परिभाषित किया गया है ।

मृत्यु आपके व्यक्तित्व को या आपकी अच्छी या बुरी इच्छा को नहीं बदलेगी । यदि आप अपने पृथ्वी के जीवन के दौरान मसीह का अनुसरण करने का चुनाव करते हैं, आपको आत्मा के संसार में शांति मिलेगी और आप अपनी चिन्ताओं से मुक्त रहेगें । जो यीशु मसीह का अनुसरण करने का चुनाव नहीं करते और पश्चाताप नहीं करते हैं वे दुखी रहेंगे ।

मृत्यु के समय आपकी आत्मा आपके शरीर को छोड़ देती है और आत्मा के संसार, सीखने और तैयारी करने के स्थान, में चली जाती है और चिन्ता और दुख से मुक्त रहती है ।

स्वर्गीय पिता जानते थे कि उनके बहुत से बच्चों को उनके जीवन काल में यीशु मसीह के बारे में सीखने का मौका नहीं मिलेगा और बहुत से अन्य उसका अनुसरण नहीं करेंगे । क्योंकि वह अपने बच्चों से प्रेम करता है, इसलिए परमेश्वर ने आत्मा के संसार में रहने वालों के लिए उसकी योजना के बारे में सीखने, यीशु मसीह में विश्वास करने, और पश्चाताप करने का एक मार्ग उपलब्ध किया है । जो यीशु मसीह को स्वीकार करते और उसका अनुसरण करते हैं उन्हें शांति और आराम मिलेगा ।

पुनरूत्थान और न्याय

वे सब जो पृथ्वी पर आए हैं उनके लिए महान उपहारों में से एक पुनरूत्थान है, जोकि यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा संभव हुआ है । जब यीशु सलीब पर मरे थे, उनकी आत्मा आत्मा के संसार में चली गई थी । तीन दिन के बाद, उसकी आत्मा उनके फिर कभी न मरने वाले महिमापूर्ण, परिपूर्ण शरीर के साथ फिर से मिल गई थी । शरीर और आत्मा के इस पुनःमिलन को *पुनरूत्थान* कहते हैं । प्रत्येक जिसने पृथ्वी पर जन्म लिया है पुनःजीवित होगा ।

आपके पुनरूत्थान के पश्चात, आप अपने कामों और अपने हृदय की इच्छाओं के अनुसार न्याय पाने के लिए परमेश्वर के सम्मुख जाएगे ।

* लाल शब्दों को पृष्ठ 18 और 19 में परिभाषित किया गया है ।

महिमा की श्रेणियां

आपके न्याय के पश्चात, आप एक महिमा के राज्य में रहेंगे । क्योंकि प्रत्येक के काम और इच्छाएं भिन्न होती हैं, इसलिए स्वर्ग में विभिन्न राज्य, या महिमा की श्रेणियां हैं ।

सलेस्टियल राज्य । स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह **सलेस्टियल** राज्य में रहते हैं । यदि आप यीशु मसीह के सुसमाचार के अनुसार जीवन जीते और प्रायश्चित के द्वारा पाप से शुद्ध किए जाते हैं, तो आप इस उच्चत्तम राज्य में स्थान पाएंगे । आप परमेश्वर के उपस्थिति में रहेंगे और संपूर्ण आनंद पाएंगे ।

टर्रस्ट्रियल राज्य । वे लोग जो यीशु मसीह के सुसमाचार को अस्वीकार करते हैं लेकिन सम्मानजनक जीवन जीते हैं **टर्रस्ट्रियल** राज्य में स्थान पाएंगे ।

टलेस्टियल राज्य । वे जो पाप करते रहते हैं और पश्चाताप नहीं करते हैं **टलेस्टियल** राज्य में स्थान पाएंगे ।

यीशु मसीह का प्रायश्चित उद्धार संभव करता है ।

पृथ्वी-पूर्व जीवन	पृथ्वी का जीवन		
	सृष्टि और पतन	यीशु मसीह में विश्वास पश्चाताप बपतिस्मा पवित्र आत्मा का उपहार अन्त तक	भौतिक मृत्यु

इस योजना का मेरे लिए क्या मतलब है ?

जब आप समझते हैं कि परमेश्वर आपके पिता हैं, कि वह आपसे प्रेम करते हैं, और कि उसने आपके लिए यहां अनुभव और ज्ञान पाना और इस जीवन के बाद उसके समान बनना संभव किया है, तब आप इस जीवन के दौरान अपने निर्णयों के महत्व को जानते हैं । आप जानते हैं कि स्वर्गीय पिता की योजना की संपूर्ण आशीषें पाने के लिए आपको यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहिए ।

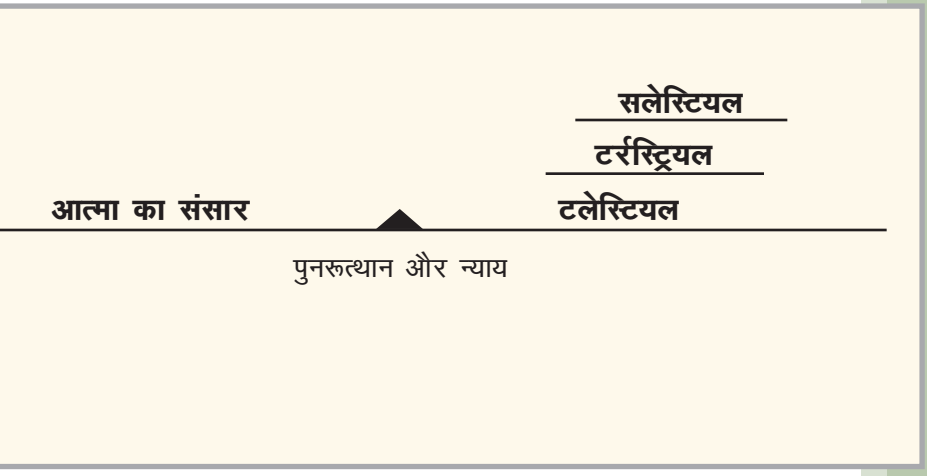

मैं कैसे जान सकता/सकती हूं ?

जोसफ स्मिथ द्वारा यीशु मसीह के सुसमाचार की पुनःस्थापना के कारण उद्धार की योजना का अधिक ज्ञान मिला है ।

स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करके आप स्वयं इन बातों की सच्चाई को जान सकते हैं । पवित्र आत्मा के द्वारा वह आपको उत्तर देगें । पवित्र आत्मा को परमेश्वर की आत्मा भी कहते हैं, और इसकी भूमिकाओं में से एक सच्चाई की गवाही या साक्षी देना है । पवित्र आत्मा अनुभूतियों, विचारों, और प्रभावों के द्वारा सच्चाई प्रकट और पुष्टि करती है । जो अनुभूतियां पवित्र आत्मा से मिलती हैं वे शक्तिशाली होती हैं, लेकिन ये अक्सर कोमल और शांत होती हैं । जैसा कि बाइबिल में सीखाया गया है, "आत्मा का फल प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, [और] संयम हैं" (गलतियों 5:22–23) । ये अनुभूतियां पवित्र आत्मा की पुष्टि हैं कि यह संदेश सच्चा है । फिर आपको चुनाव करना होगा कि आप यीशु मसीह की शिक्षाओं के अनुरूप जीवन जीएंगे जैसा कि जोसफ स्मिथ द्वारा पुनःस्थापित की गई हैं ।

मैं प्रार्थना कैसे करूं ?

- *अपने स्वर्गीय पिता को संबोधित करें ।*
- *अपने हृदय की अनुभूतियों (कृतज्ञता, प्रश्न, मॉरमन की पुस्तक की सच्चाई और जो प्रचारकों ने सीखाया है उसकी पुष्टि के अनुरोध को व्यक्त करें) ।*
- *समापन ("यीशु मसीह के नाम में, आमीन") ।*

आप गंभीरता से प्रार्थना करने के द्वारा सच्चाई जान सकते हैं ।

शब्दों की सूची

चुनने की स्वतंत्रता अच्छे और बुरे में, सही और गलत में से चुनने का परमेश्वर से मिला उपहार ।

प्रायश्चित वह घटना जो हमें परमेश्वर के अनुरूप बनने के योग्य बनाती है । प्रायश्चित करने का अर्थ है पाप के लिए दंड, इस प्रकार पश्चतापी पापियों से पाप के प्रभावों को दूर करना है । संपूर्ण मानवजाति के लिए परिपूर्ण प्रायश्चित करने के लिए यीशु मसीह ही एकमात्र योग्य थे । उसके प्रायश्चित में उसका हमारे पापों के लिए दुख उठाना, उसका लहू बहाना, और उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान शामिल है । प्रायश्चित के कारण, प्रत्येक जो जीवन जीए हैं वे पुनःजीवित होगें । प्रायश्चित हमारे पापों को क्षमा करने और परमेश्वर के साथ हमेशा रहने के लिए हमें मार्ग भी उपलब्ध कराता है ।

पतन वह घटना जिसके द्वारा मानवजाति नाशवर बनी थी । इसके परिणाम स्वरूप परमेश्वर से आत्मिक और शारीरिक अलगाव हुआ था । क्योंकि आदम और हव्वा, प्रथम मानव, ने परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं माना था, इसलिए उन्हें उनकी उपस्थिति से अलग कर दिया गया था (इस अलगाव को आत्मिक मृत्यु भी कहते हैं) और नाशवर बने थे (शारीरिक मृत्यु के अधीन) । आदम और हव्वा के वंशजों के रूप में, हमें भी परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिया है और हम शारीरिक मृत्यु के अधीन हैं । यीशु मसीह का प्रायश्चित शारीरिक और आत्मिक मृत्यु दोनों पर विजय प्राप्त करता है ।

अनुग्रह यीशु मसीह की दया और प्रेम के द्वारा दिव्य सहायता और शक्ति दी जाती है । उसके अनुग्रह के द्वारा, उसके प्रायश्चित द्वारा संभव, संपूर्ण मानवजाति पुनःजीवित होगी । उसके अनुग्रह के द्वारा, जो निंरतर पश्चाताप करते और उसके सुसमाचार के अनुसार जीवन जीते हैं इस जीवन में स्वर्गीय पिता चिरस्थाई निकटता महसूस करेंगे और इस जीवन के पश्चात उसकी उपस्थिति में रहेंगे ।

धर्मविधि पौरोहित्य अधिकार द्वारा की जाने वाली एक पवित्र, औपचारिक प्रक्रिया है । उदाहरण में शामिल हैं बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का उपहार पाना, और प्रभुभोज । धर्मविधियां अक्सर परमेश्वर के साथ अनुबंध बनाने का माध्यम होती हैं ।

शारीरिक मृत्यु नाशवर शरीर से आत्मा का अलगाव । जब भौतिक शरीर मरता है, आत्मा आत्मा के संसार में जीवित रहती है । हम पुनरूत्थान के द्वारा शारीरिक मृत्यु पर विजय पाते हैं, जो यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा संभव हुआ था ।

उद्धार की योजना हमें उसके समान बनने और परिपूर्ण आनंद पाने के लिए स्वर्गीय पिता की योजना है । यह योजना यीशु मसीह के प्रायश्चित पर केन्द्रीत है और इसमें सब आज्ञाएं, धर्मविधियां, और सुसमाचार की शिक्षाएं शामिल हैं ।

पृथ्वी-पूर्व जीवन इस पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले हमारा जीवन था । हमारे पृथ्वी-पूर्व जीवन में, हम अपने स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में उसके बच्चों के रूप में रहते थे । हमारे पास भौतिक शरीर नहीं था ।

पुनरूत्थान शारीरिक मृत्यु के पश्चात, मांस और हड्डी के परिपूर्ण भौतिक शरीर का आत्मा से पुनःमिलन होता है । यीशु मसीह पुनःजीवित होने वालों में प्रथम था । पुनरूत्थान के पश्चात आत्मा और शरीर फिर कभी अलग नहीं होगें, और व्यक्ति हमेशा के लिए जीवित रहेगा । प्रत्येक व्यक्ति जो जीवन जीया है प्रायश्चित के कारण पुनःजीवित होगा ।

उद्धार पाप और मृत्यु से छुटकारा । यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा उद्धार संभव हुआ है । यीशु मसीह के पुनरूत्थान के द्वारा, प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु के प्रभावों पर विजय पाएगा । यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा हम पाप के प्रभावों से भी बचाए जा सकते हैं । यह विश्वास पश्चाताप के जीवन और सुसमाचार की व्यवस्था और धर्मविधियों के प्रति आज्ञाकारिता और मसीह की सेवा में दिखाई देता है ।

आत्मा व्यक्ति का वह भाग जो जन्म से पहले स्वर्गीय पिता के साथ रहता था । पृथ्वी पर जीवन के दौरान, आत्मा भौतिक शरीर के साथ मिलती है । मृत्यु के बाद भी आत्मा जीवित रहती है ।

आत्मा का संसार आत्माएं मृत्यु और पुनरूत्थान के बीच कहाँ जाती हैं । जिन्होंने अपने जीवन के दौरान धार्मिक जीवन जीया था उनके लिए, आत्मा का संसार शांति और आनंद का स्थान होगा ।

आत्मिक मृत्यु परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानने के कारण उससे अलग होना । जब हम पश्चाताप करते और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं हम यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा आत्मिक मृत्यु से बचाए जाते हैं ।

अतिरिक्त अध्ययन

निम्नलिखित प्रश्न और धर्मशास्त्र इस पुस्तिका में दिए गए नियमों के विषय में अधिक सीखने और उन पर मनन करने में मदद करेंगे । यह विस्तृत सूची नहीं है; धर्मशास्त्रों में पाद टिप्पणियां और प्रतिनिर्देश आपको इन सिद्धान्तों के बारे में अतिरिक्त परिच्छेदों और स्रोतों का हवाला देगा ।

आपके जन्म लेने से पहले परमेश्वर के साथ आपके क्या संबंध थे ?

यिर्मयाह 1:5 (बाइबिल, पुराना नियम)

इब्रानियों 12:9 (बाइबिल, नया नियम)

पतन क्या है ? यह क्यों जरूरी था ?

2 नफी 2:14–26 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 48–49)

अलमा 42:2–9 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 276–77)

आपके जीवन का यहां क्या उद्देश्य है ? यह ज्ञान किस प्रकार प्रतिदिन आपके निर्णय लेने को प्रभावित कर सकता है ?

2 नफी 2:25–27 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 49)

अलमा 34:32 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 262)

प्रायश्चित क्या है ? किस प्रकार यह आपके दैनिक जीवन में मदद कर सकता है ?

यूहन्ना 3:16–17 (बाइबिल, नया नियम)

रोमियों 3:23–25 (बाइबिल, नया नियम)

2 नफी 2:6–8 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 47)

अलमा 7:11–12 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 196)

अलमा 42:22–23 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 278)

आत्मा का संसार क्या है ? वहां क्या होता है ?

1 पतरस 4:6 (बाइबिल, नया नियम)

अलमा 40:11–14 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 274)

पुनरूत्थान होने का क्या अर्थ है ? कौन पुनःजीवित होगा ? क्यों पुनरूत्थान महत्वपूर्ण है ?

2 नफी 9:13–15 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 61)

अलमा 11:42–45 (मॉरमन की पुस्तक, पृष्ठ 207)

स्वर्ग क्या है ? महिमा के अलग-अलग स्तर क्यों हैं ?

1 कुरिन्थियों 15:40–43 (बाइबिल, नया नियम)

हमारे साथ उपासना करें

आएं और देखें कि कैसे सुसमाचार आप के जीवन को आशीषित कर सकता है

प्रभुभोज सभा मुख्य उपासना सभा है । यह लगभग एक घण्टे से थोड़ा ज्यादा समय की और इसमें प्रायः निम्नलिखित सम्मलित होते हैं :

स्तुतिगीत : कलीसिया द्वारा गाया जाता है । (स्तुतिगीत किताबें उपलब्ध की जाती हैं ।)

प्रार्थनाएं : स्थानीय गिरजाघर के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं ।

प्रभुभोज : कलीसिया को यीशु मसीह के प्रायश्चित का स्मरण करने के लिए रोटी और पानी को आशीषित करके बांटा जाता है ।

वार्ताकार : कलीसिया के एक या दो सदस्यों को सुसमाचार के विषय में बोलने के लिये पहले से नियुक्त किया जाता है ।

पोशाक : पुरुष और युवक हमेशा सूट या अच्छी पेन्ट के साथ कमीज और टाई पहनते हैं । महिलाएं और लड़कियां अन्य पोशाक या स्कर्ट पहनती हैं ।

उपासना सभा के दौरान दान की आवश्यकता नहीं है ।

हम आपको अतिरिक्त सभाओं में, आपके रुचि और आयु के अनुसार भाग लेने के लिये भी आमंत्रित करते हैं । इन सभाओं के क्रम और उपलब्धता में अन्तर हो सकता है ।

रविवार विद्यालय : धर्मशास्त्रों और सुसमाचार के सिद्धान्तों के अध्ययन के लिए कक्षाएं ।

पौरोहित्य सभाएं : पुरुषों और 12 वर्ष और उससे बड़े लड़कों के लिये कक्षाएं ।

सहायता संस्था : 18 वर्ष और उससे बड़ी स्त्रियों के लिये कक्षाएं ।

युवतियां : लड़कियों के लिये कक्षाएं वर्ष 12 से 18 तक ।

प्राथमिक : समुह सभा और कक्षाएं 3 से 11 की आयु के बच्चों के लिये । 18 माह से 3 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए अक्सर नर्सरी उपलब्ध होती है ।

प्रभुभोज सभा का समय : _____

चैपल का पता : _____

_____

मुझे क्या करना चाहिए ?

- मॉरमन की पुस्तक का अध्ययन करें ।
  प्रस्तावित अध्ययन: _____
  _____
- जो प्रचारकों ने सीखाया है उसकी सच्चाई जानने के लिए प्रार्थना करें ।
- गिरजाघर जाएं ।
- _____ को बपतिस्मा लेने की तैयारी करें ।
- स्वर्गीय पिता की उद्धार की योजना के विषय में अधिक जानने के लिए *www.mormon.org* पर जाएं ।
- वर्तमान भविष्यवक्ताओं द्वारा परमेश्वर ने सच्चाइयों को पुनःस्थापित किया है की सच्चाइयों के बारे में अधिक सीखने के लिए प्रचारकों से मिलना जारी रखें ।

  अगली नियुक्तिः _____

  प्रचारकों के नाम और फोन नबंर :

  _____

  _____

अन्तिम-दिनों के सन्तों का
यीशु मसीह
का गिरजाघर

www.mormon.org

चित्र श्रेय
मुख पृष्ठ: *वह जी उठा है* से विवरण, डेल पॉरसन द्वारा । © डेल पॉरसन । प्रतिलिपि न बनाएं
पृष्ठ 11: *मसीह गतसमनी में* से विवरण, हैरी एंडरसन द्वारा
पृष्ठ 13: *वह जी उठा है*, ग्रेग ऑलसन द्वारा । © ग्रेग ऑलसन । प्रतिलिपि न बनाएं
पृष्ठ 3, 4, 8, 22, 23 स्टीव बुंडरसन द्वारा

© 2005 by Intellectual Reserve, Inc द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी ।
अंग्रेजी अनुमतिः11/05 । अनुवाद अनुमतिः11/05 । *The Plan of Salvation* का अनुवाद । Hindi । 01189 294

HINDI
4 02011 89294 8
01189 294